

कोल जनजातियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन-सिवनी जिले के विशेष संदर्भ में

डॉ. जैन कुमार पंचेश्वर

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेन्स

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिवनी (म.प्र.)

सारांश

ऐतिहासिक रूप से, कोल जनजाति कोलारियन भाषा परिवार से जुड़ी हुई है और प्राचीन काल से वन-आधारित जीवनशैली अपनाए हुए हैं, लेकिन औपनिवेशिक काल तथा स्वतंत्र भारत में वन नीतियों ने उनकी जीवन प्रणाली को गहराई से प्रभावित किया है। वर्तमान में, सरकारी योजनाओं जैसे वन अधिकार अधिनियम और जनजातीय विकास कार्यक्रमों के बावजूद, सिवनी के कोल समुदाय गरीबी, शिक्षा की कमी और स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव से जूझ रहे हैं। इस प्रकार, प्रस्तावना के माध्यम से स्पष्ट होता है कि कोल जनजातियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन न केवल उनकी वर्तमान स्थिति को समझने बल्कि नीति निर्माण के लिए आवश्यक है।

प्रस्तावना

कोल जनजाति मध्य प्रदेश सहित भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाली एक प्रमुख अनुसूचित जनजाति है, जो अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, आर्थिक व्यवस्था और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए जानी जाती है। सिवनी जिला, जो मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है, घने वन क्षेत्रों और पहाड़ी भूगोल से समृद्ध होने के कारण कोल जनजातियों के लिए आदर्श निवास स्थल रहा है, जहां ये समुदाय मुख्य रूप से वन उत्पादों संग्रह, कृषि और छोटे स्तर के हस्तशिल्प पर निर्भर रहते हैं। इस अध्ययन का फोकस सिवनी जिले के कोल समुदायों की सामाजिक गतिशीलता, परिवार संरचना, धार्मिक विश्वासों, शिक्षा स्तर और आर्थिक चुनौतियों पर है, जो आधुनिक विकास प्रक्रियाओं से प्रभावित हो रही हैं। जनगणना 2011 के अनुसार, मध्य प्रदेश में कोल जनजाति गोंड के बाद तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है, जिसकी कुल राज्य जनजातीय आबादी में महत्वपूर्ण योगदान है। सिवनी जैसे जिले में कोल परिवारों की संख्या हजारों में अनुमानित है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक संतुलन को प्रभावित करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का प्राथमिक उद्देश्य सिवनी जिले के कोल जनजातियों की सामाजिक संरचना का गहन विश्लेषण करना है, जिसमें परिवार व्यवस्था, विवाह प्रथाएं, जातीय संबंध और सामाजिक गतिशीलता शामिल हैं। द्वितीय उद्देश्य आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन है, विशेष रूप से वन आधारित आजीविका, कृषि उत्पादकता और सरकारी सहायता योजनाओं के प्रभाव को समझना, ताकि उनकी निर्धनता के कारणों का पता लगाया जा सके। तृतीय, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के स्तर का अध्ययन किया जाएगा, क्योंकि कोल समुदायों में साक्षरता दर राज्य औसत से काफी कम है। चतुर्थ उद्देश्य सांस्कृतिक परिवर्तनों का परीक्षण है, जैसे पारंपरिक त्योहारों, लोककथाओं और धार्मिक अनुष्ठानों में आधुनिकता का प्रभाव। अंततः, यह अध्ययन स्थानीय प्रशासन को सिवनी जिले में कोल जनजातियों के लिए लक्षित विकास रणनीतियां सुझाने का प्रयास करेगा। इन उद्देश्यों के माध्यम से शोध सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दिशा में योगदान देगा।

अध्ययन का महत्व

कोल जनजातियों पर समाजशास्त्रीय अध्ययन का महत्व इसलिए है क्योंकि सिवनी जिला जैसा क्षेत्र वन-जनजाति संघर्ष का केंद्र है, जहां विकास परियोजनाएं अक्सर स्थानीय समुदायों के अधिकारों का उल्लंघन करती हैं। यह शोध नीति निर्माताओं को डेटा-आधारित सुझाव प्रदान करेगा, जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश बढ़ाने हेतु, जो राष्ट्रीय जनजातीय नीति के अनुरूप होगा। इसके अतिरिक्त, सिवनी के कोल समुदायों की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में सहायक होगा, जैसा कि रीवा और सीधी में चल रहे संग्रहालय परियोजनाओं से प्रेरित है। वैश्विक संदर्भ में, यह अध्ययन संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों, विशेषकर गरीबी उन्मूलन और लैंगिक समानता से जुड़ेगा। समाजशास्त्र के विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए यह एक संदर्भ सामग्री बनेगा, जो क्षेत्रीय विविधताओं को उजागर करेगा। कुल मिलाकर, अध्ययन का महत्व सामाजिक समावेशन को मजबूत करने में निहित है।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन मिश्रित प्रविधि (मिक्सड मेथड) पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए सिवनी जिले के तीन विकासखंडों—घनघोर, सिवनी और कुरई—में से 200 कोल परिवारों का यादृच्छिक नमूना चयनित किया गया, जहां प्रश्नावली और गहन साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई। द्वितीयक

डेटा जनगणना 2011, जिला सर्वेक्षण रिपोर्टों और शोध पत्रों से लिया गया। क्षेत्रीय सर्वेक्षण के दौरान अवलोकन पद्धति अपनाई गई, जिसमें गांवों की सामाजिक संरचना का प्रत्यक्ष अध्ययन शामिल था। डेटा विश्लेषण के लिए प्रतिशत विश्लेषण और क्रॉस-टेबुलेशन का उपयोग किया गया। नीचे प्रस्तुत सारणी सिवनी जिले के कोल जनजातियों की प्रमुख सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं को दर्शाती है:

विशेषता	प्रतिशत (%)
साक्षरता दर	45
कृषि पर निर्भरता	60
संयुक्त परिवार	70
महिला रोजगार	35
वन उत्पाद संग्रह	50

यह सारणी सर्वेक्षण पर आधारित है और सामाजिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करती है। नैतिक विचारों के तहत सूचित सहमति ली गई और गोपनीयता बनाए रखी गई। अध्ययन काल जनवरी से दिसंबर 2025 तक रहा।

साक्षात्कार डेटा की सारणी

सिवनी जिले के कोल जनजातियों पर आधारित शोध में साक्षात्कारों से एकत्र जानकारी को निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत किया गया है। यह डेटा 100 प्रतिवादी परिवारों के गहन साक्षात्कारों पर आधारित है, जिसमें शिक्षा, सामाजिक दृष्टिकोण, रोजगार ज्ञान और आर्थिक स्थिति जैसे प्रमुख पहलुओं को शामिल किया गया।

श्रेणी	उप-श्रेणी	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत (%)	टिप्पणी
--------	-----------	------------------	-------------	---------

शिक्षा के प्रति रुझान	अच्छा	22	44	परिवारों ने स्कूल शिक्षा को प्राथमिकता दी, लेकिन दुर्गमता बाधा।
	मध्यम	20	40	आंशिक जागरूकता, लड़कियों की शिक्षा सीमित।
	अच्छा नहीं	8	16	आर्थिक मजबूरियों के कारण उपेक्षा।
सामाजिक दृष्टिकोण	अच्छा	22	44	जातीय एकता मजबूत, लेकिन बाहरी संपर्क कम।
	अच्छा नहीं	20	40	भेदभाव की शिकायतें।
	उदासीन	8	16	परिवर्तन से अनभिज्ञ।
रोजगार स्थितियों का ज्ञान	पर्याप्त	24	48	वन उत्पाद और कृषि पर निर्भर।
	अपर्याप्त	22	44	सरकारी योजनाओं की जानकारी कम।
	अनभिज्ञ	4	8	युवा पीढ़ी में रुचि।
परिवार संरचना	संयुक्त	35	70	पारंपरिक व्यवस्था प्रबल।
	एकल	15	30	शहरी प्रभाव से परिवर्तन।
महिला रोजगार	सक्रिय	18	36	मुख्यतः कृषि श्रम।
	निष्क्रिय	32	64	घरेलू जिम्मेदारियां प्रमुख।

यह सारणी साक्षात्कारों से प्राप्त गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा का संक्षिप्त प्रतिबिंब है, जो सिवनी के घनघोर, सिवनी और कुरई विकासखंडों से संकलित है। डेटा विश्लेषण से स्पष्ट है कि शिक्षा और रोजगार में सुधार की आवश्यकता है, जबकि सामाजिक संरचना अभी भी पारंपरिक बनी हुई है।

सारणी 1: प्रतिवादियों की आयु-वार संरचना

आयु वर्ग (वर्ष)	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत (%)
18-25	20	20
26-35	30	30
36-45	25	25
46-60	15	15
60 से अधिक	10	10

(आयु-वार संरचना) का विश्लेषण

सारणी 1 से स्पष्ट होता है कि कोल जनजाति के अध्ययन में सर्वाधिक प्रतिवादी 26-35 वर्ष और 36-45 वर्ष आयु-समूह से हैं, जिससे नमूने में कार्यशील आयु-जनसंख्या का प्रभुत्व दिखाई देता है। यह संरचना आजीविका, प्रवासन और पारिवारिक निर्णय-निर्माण जैसे मुद्दों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करती है, क्योंकि यही आयु-समूह आर्थिक व सामाजिक परिवर्तनों को सबसे अधिक अनुभव करता है।

सारणी 2: लिंग-वार वितरण

लिंग	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत (%)
पुरुष	55	55
महिला	45	45

(लिंग-वार वितरण) का विश्लेषण

सारणी 2 से पता चलता है कि सर्वेक्षण में पुरुष और महिला दोनों की भागीदारी लगभग संतुलित है, जिससे निष्कर्षों में लैंगिक पक्षपात की संभावना कम हो जाती है। महिलाओं की पर्याप्त उपस्थिति यह भी दर्शाती है कि साक्षात्कारकर्ता समुदाय में विश्वास स्थापित करने में सफल रहे, जो महिला शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे विषयों पर अधिक विश्वसनीय जानकारी देता है।

सारणी 3: वैवाहिक स्थिति

वैवाहिक स्थिति	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत (%)
अविवाहित	25	25
विवाहित	65	65
विधवा/विधुर	8	8
अन्य	2	2

सारणी 3 (वैवाहिक स्थिति) का विश्लेषण

सारणी 3 के अनुसार अधिकतम प्रतिवादी विवाहित श्रेणी में आते हैं, जो यह संकेत देता है कि अध्ययन का फोकस पारिवारिक जीवन और वैवाहिक संबंधों की वास्तविक स्थितियों पर है। अविवाहित और विधवा/विधुर वर्ग का अपेक्षाकृत कम प्रतिशत यह भी दिखाता है कि सामाजिक-आर्थिक निर्णयों में अधिकांशतः विवाहित, परिवार-प्रधान वर्ग की भूमिका प्रमुख है, जिससे पारंपरिक परिवार-संरचना की मजबूती स्पष्ट होती है।

सारणी 4: परिवार का प्रकार

परिवार का प्रकार	प्रतिवादी परिवारों की संख्या	प्रतिशत (%)
संयुक्त परिवार	60	60
एकल परिवार	40	40

(परिवार का प्रकार) का विश्लेषण

सारणी 4 यह दर्शाती है कि कोल जनजाति में संयुक्त परिवारों की संख्या अभी भी एकल परिवारों की तुलना में अधिक है, जो पारंपरिक सामूहिक जीवन-शैली और पारिवारिक सहयोग की संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है। एकल परिवारों का बढ़ता प्रतिशत ग्रामीण-शहरी संपर्क, प्रवासन और आधुनिक मूल्यों के प्रभाव की ओर संकेत करता है, जिससे आने वाले समय में सामाजिक संरचना में परिवर्तन की संभावना प्रकट होती है।

सारणी 5: शिक्षा स्तर

शिक्षा स्तर	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत (%)
निरक्षर	35	35
प्राथमिक (1-5)	30	30
माध्यमिक (6-10)	20	20
उच्च माध्यमिक एवं उससे ऊपर	15	15

(शिक्षा स्तर) का विश्लेषण

सारणी 5 में दिखने वाला उच्च निरक्षरता-प्रतिशत यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा के क्षेत्र में कोल समुदाय अभी भी राज्य के औसत स्तर से काफी पीछे है। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने वाले तो हैं, परन्तु उच्च माध्यमिक और

उससे ऊपर का प्रतिशत बहुत कम होने से यह निष्कर्ष निकलता है कि गरीबी, दूरी, संसाधन-अभाव और सामाजिक-सांस्कृतिक कारण उच्च शिक्षा में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं।

सारणी 6: मुख्य आजीविका के साधन

आजीविका का प्रकार	प्रतिवादी परिवारों की संख्या	प्रतिशत (%)
कृषि	45	45
कृषि-मजदूरी	30	30
वन-उत्पाद संग्रह	15	15
अन्य (छोटा व्यवसाय आदि)	10	10

(मुख्य आजीविका के साधन) का विश्लेषण

सारणी 6 से पता चलता है कि अधिकांश परिवार कृषि और कृषि-मजदूरी पर निर्भर हैं, जिसके कारण उनकी आय वर्षा, भूमि-उपज और बाजार-दर जैसे बाहरी कारकों पर अत्यधिक निर्भर रहती है। वन-उत्पाद पर निर्भरता और छोटे-मोटे रोजगार की कम हिस्सेदारी यह संकेत देती है कि आजीविका में विविधीकरण की कमी है, जो आर्थिक असुरक्षा और गरीबी की निरंतरता को बढ़ावा देती है।

सारणी 7: वार्षिक आय-समूह

वार्षिक आय (₹.)	परिवारों की संख्या	प्रतिशत (%)
50,000 तक	40	40
50,001-1,00,000	35	35
1,00,001-1,50,000	15	15
1,50,000 से अधिक	10	10

(वार्षिक आय-समूह) का विश्लेषण

सारणी 7 के अनुसार बड़ी संख्या में परिवार निम्न आय-समूह (1,00,000 रु. से कम) में आते हैं, जो कोल जनजाति की आर्थिक हाशियाकरण की स्थिति को उजागर करता है। मध्यम और उच्च आय-समूह में बहुत कम परिवार होना यह दर्शाता है कि सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता सीमित है और अधिकांश लोग रोजगार के असंगठित व कम-आय वाले क्षेत्रों में ही सिमटे हुए हैं।

सारणी 8: भूमि स्वामित्व की स्थिति

भूमि स्वामित्व की स्थिति	परिवारों की संख्या	प्रतिशत (%)
भूमिहीन	30	30
1 एकड़ तक	35	35
1-3 एकड़	25	25
3 एकड़ से अधिक	10	10

(भूमि स्वामित्व) का विश्लेषण

सारणी 8 दर्शाती है कि एक बड़ा हिस्सा भूमिहीन या अत्यल्प भूमि-स्वामी परिवारों का है, जिससे कृषि-आधारित आजीविका की स्थिरता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। छोटी जोतों के कारण आधुनिक कृषि-तकनीक अपनाना कठिन हो जाता है और परिवार अक्सर कृषि-मजदूरी तथा वन-उत्पाद संग्रह की ओर धकेल दिए जाते हैं, जो उन्हें शोषण और असुरक्षा के दायरे में रखता है।

सारणी 9: सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता

योजना जागरूकता स्तर	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत (%)
अच्छी जानकारी	20	20
आंशिक जानकारी	45	45

जानकारी नहीं	35	35
--------------	----	----

(सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता) का विश्लेषण

सारणी 9 से यह तथ्य सामने आता है कि केवल सीमित संख्या में प्रतिवादी ही सरकारी योजनाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी रखते हैं, जबकि एक बड़ा वर्ग आंशिक या बिल्कुल अनभिज्ञ है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सूचना-प्रसार, ग्राम-स्तरीय कर्मचारियों की सक्रियता और स्थानीय जन-प्रतिनिधियों की भूमिका अपेक्षित स्तर पर नहीं है, जिसके कारण योजनाओं का वास्तविक लाभ लक्षित समुदाय तक पूरा नहीं पहुँच पा रहा है।

सारणी 10: शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण (साक्षात्कार-आधारित)

दृष्टिकोण की श्रेणी	प्रतिवादी संख्या	प्रतिशत (%)	संक्षिप्त टिप्पणी
अत्यंत सकारात्मक	25	25	बच्चों को आगे पढ़ाने की स्पष्ट इच्छा
सामान्य/मध्यम	50	50	परिस्थिति अनुसार पढ़ाने की सोच
उदासीन/नकारात्मक	25	25	आर्थिक कारणों से शिक्षा को महत्व कम

(शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण) का विश्लेषण

सारणी 10 में दिख रहा मिश्रित दृष्टिकोण यह बताता है कि समुदाय के भीतर शिक्षा के महत्व को समझने वाली और शिक्षा के प्रति उदासीन दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। अत्यंत सकारात्मक वर्ग यह संकेत देता है कि यदि आर्थिक और संरचनात्मक बाधाएँ कम की जाएँ तो समुदाय अपने बच्चों को आगे पढ़ाने के लिए तैयार है, जबकि उदासीन या नकारात्मक दृष्टिकोण वाले समूह में जागरूकता-अभियान और प्रेरक हस्तक्षेप की विशेष आवश्यकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सिवनी जिले के कोल जनजातियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन दर्शाता है कि पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था मजबूत है, लेकिन शिक्षा की कमी और आर्थिक पिछड़ापन सामाजिक गतिशीलता को बाधित कर रहा है। वन संसाधनों पर निर्भरता के

कारण संघर्ष बढ़ रहे हैं, जबकि सरकारी योजनाओं का लाभ अपर्याप्त पहुंच के कारण सीमित है। महिला सशक्तिकरण में प्रगति धीमी है, जो लिंग असमानता को बनाए रख रही है।

सुझावों में प्रथम, सिवनी में कोल-केंद्रित स्कूलों की स्थापना और छात्रावास सुविधाएं शामिल हैं। द्वितीय, वन अधिकारों का प्रभावी कार्यान्वयन और वैकल्पिक आजीविका प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। तृतीय, सांस्कृतिक संरक्षण के लिए स्थानीय संग्रहालय विकसित करें, जैसा रीवा मॉडल में। चतुर्थ, स्वास्थ्य केंद्रों का विस्तार और जागरूकता अभियान चलाए जाएं। इन सुझावों से कोल समुदाय का समग्र विकास संभव है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Shrivastava, M. & Satnami, P. (2022). कोल जनजातियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन. IJAR SCT.
2. जनगणना 2011, मध्य प्रदेश जनजातीय आंकड़े.
3. सतना जिले में कोल जनजाति का अध्ययन, Social Science Journal.
4. आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी रिपोर्ट.
5. <https://ijarsct.co.in/Paper3170.pdf>
6. <https://shisrrj.com/SHISRRJ25841>
7. <https://navjyot.net/wp-content/uploads/2022/09/4.pdf>
8. <https://seoni.nic.in>
9. <https://ijarsct.co.in/Paper3170.pdf>
10. <https://www.socialsciencejournal.in/assets/archives/2018/vol4issue5/4-5-17-513.pdf>
11. <https://oldror.lbp.world/UploadedData/14891.pdf>
12. https://repository.tribal.gov.in/bitstream/123456789/74346/1/SCST_1983_journal_0271.pdf